लॉक डाउन

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

लॉक डाउन

(कविता-संग्रह)

'साथी' जहानवी

(अजय कुमार शर्मा)

समर प्रकाशन
106, प्रथम तल, कान्हा एनक्लेव 52-54
CD ब्लॉक, दादूदयाल नगर, जयपुर-302029
दूरभाष : 0141-2213700, 98290-18087
ई-मेल : samarprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN :

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'

आवरण संयोजन : समर टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर

मूल्य : ₹ 120/-

LOCK DOWN (POETRY) by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

धरती माँ,

हर उस जीव,

दरिया व शजर को

जिसकी वज़ह से यह कायनात

खूबसूरत, महफ़ूज़ व खुशहाली से आबाद है

और

माँ की निस्वार्थ

ममता, करुणा, स्नेह,

वात्सल्य और इन्सानियत

जो किसी भी मज़हब, धन दौलत

लोभ लालच और दीनो ईमान से परे है

अनुक्रम

ऐसे में ऐसे : एक	13
ऐसे में ऐसे : दो	17
हसीन मौत	29
यह कैसी होली	30
सजन ऐसे रंग लगाना	33
फिर क्यों नहीं	37
जीवन की दास्तान	45
मानव बम कोरोना	48
इन्क़लाब ज़िन्दाबाद	57
बेज़ुबान जानवर	61
सच और सपने	64
गुलामी की आज़ादी	69
जीवन के रंग	74
लॉक डाउन	84
ज़ालिम ज़िन्दगी	91
आपदा के देवदूत	96

मेरी क़लम से मेरे ख़यालात

पूर्व में तीन बार में एक साथ पाँच, छह और सात, कुल 18 काव्य संग्रहों के विमोचन के बाद अब एक ग़ज़ल संग्रह 'ख़ुद को बहुआयें', दो रूमानियत मुक्तक संग्रह 'जंजीरों में हवा', 'अज्ञातवास', ग्यारह छन्द मुक्त कविता संग्रह 'इलाज ही बीमार', 'दो मिनट का मौन', 'एकलव्य का अँगूठा', 'जीवन ही जेल', 'चुल्लू भर पानी में', 'गिरेबान में झाँक कर', 'रोटी में भूख', 'सुसाइड नोट', 'लॉक डाउन', 'भगवान भी मालिक नहीं', 'स्वयं से ही प्रश्न' एक साथ प्रकाशित कराने की ओर अग्रसर हूँ।

लिखना और पढ़ना मेरे लिये एक नियमित दैनिक प्रक्रिया है इसलिये इतना कुछ लिखने का मुश्क़िल काम सहजता और सरलता से मेरे लिये बहुत आसान रहता है। लिखने के लिये मुझे कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ती। नियमित दैनिक दिनचर्या में जो पढ़ता, देखता, सुनता, समझता और सहन करता हूँ उसको ही कुछ अलग संवेदनशील तरह से सोच कर लिखना ही मेरे लिये एक रचना कर्म है। जो कभी ग़ज़ल में तो कभी मुक्तक तो कभी कविता के रूप में आकार लेकर साकार होता है। रचनाओं की विषय वस्तु में अक्सर संवेदनशील करुणा के साथ व्यंग्य होता है। क्योंकि:-

मैं जब ख़ुद के भीतर जाता हूँ
तब तो मैं ख़ुद भी तर जाता हूँ
ख़ुद ही ख़ुद को लायक समझ
मुश्क़िल भी आसाँ कर जाता हूँ

मुझे साहित्य की किसी भी विद्या की कोई विशेष जानकारी नहीं है इसलिये मैं अपने आपको साहित्यकार नहीं मानकर एक मेहनती और ईमानदार रचनाकर्मी मानता हूँ। इसलिये इन रचनाओं को व्याकरण के दृष्टिकोण से परखना उचित नहीं होगा। क्योंकि:-

मैं तो वैसा भी नहीं, मैं तो उनके जैसा भी नहीं
मैं जैसा भी हूँ वैसा ख़ुद को हाज़िर कर रहा हूँ

इन काव्य संग्रहों की रचनायें रहस्य और छायावाद में न होकर इन रचनाओं की विषयवस्तु, सोच और शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि स्पष्टवादिता से समाज का हर वर्ग, किसी भी उम्र का इन्सान इन रचनाओं को आसानी से समझ ले और उसको अपने अहसास और जज़्बात, ख़्वाब और ख़याल इन रचनाओं में मिले क्योंकि इन रचनाओं की विषय वस्तु व्यक्तिगत नहीं होकर समग्र समाज का चिन्तन और मनन का दृष्टिकोण है। क्योंकि:-

जिसमें मिला उसी रंग का हो गया
पानी का यही रंग तो हिन्दुस्तानी है

बहुत कुछ ऐसा होता है जो आँखों ने देख तो लिया, नज़रों में आकार, साकार भी हो गया, अहसास और महसूस भी कर लिया मगर कहने और लिखने के लिये शब्द नहीं होते। वैसे भी बहुत कुछ ऐसा भी लिखने में आ जाता है जो कल्पनाओं से परे की सच्चाई होते हैं। कई बार सामान्य सी विषय वस्तु पर भी बहुत कुछ बहुत अच्छा लिखने में आ जाता है तो कई बार बहुत अच्छी विषय वस्तु पर भी कुछ भी लिखने में नहीं आता है। कुछ भी नहीं लिख पाना या बहुत कुछ लिख जाना यह सब मनोस्थिति पर निर्भर करता है। कुछ तहरीरें पत्थरों पर लिखी हुई तहरीर जैसी होती है जो समय के साथ धूमिल होकर मिट जाती हैं मगर कुछ तहरीरें दिलो दिमाग़ में असर कर जाती हैं वो लिखी हुई नहीं होकर भी कभी नहीं मिटती। क्योंकि:-

आँखों के पास कहने को ज़ुबान नहीं
ज़ुबान के पास आँखों के बयान नहीं
न तो कानों सुनी और न आँखों देखी
कोई सच दिले आवाज़ के समान नहीं

इन रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मानसिक राजनैतिक और सरकारी विसंगतियों, कुरीतियों, जातिवाद, छुआछूत, लिंग भेद, क़ानून व्यवस्था, ख़ुदग़र्ज़ी, बेईमानी, चालाकी, मक़्क़ारी, ज़ुल्मो सितम, अपराध, बेरोजगारी, बनावटी रिश्ते, ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, धार्मिक उन्माद, देश द्रोह, आंतकवाद, चोरी, हत्या, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, बालश्रम, यौन शौषण इत्यादि बुराईयों पर आसान

शब्दों और सामान्य सोच के साथ व्यंग्य करके आम आदमी को समझाने की कोशिश की गई है। क्योंकि:-

जब ज़ुबान से लफ़्ज ख़ामोश हो जाये
ख़ामोश निगाहों का फिर आवाज़ होना

मैं हर उस जीव जन्तु और हर उस जर्रे-जर्रे का बहुत आभारी हूँ जो मेरी इन संवेदनशील रचनाओं की विषय वस्तु बने हैं। उम्मीद है कि आपको ये रचनायें पसन्द आयेंगी। आशा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अनमोल विचारों से इस तुच्छ रचनाकर्मी को अवश्य अवगत करायेंगे। ताकि भविष्य में इन सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। इन रचनाओं से अगर किसी का तन-मन, दिलो दिमाग़ आहत होता हैं तो मैं इसके लिये अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि:-

वैसे तो मैं चलायमान समय हूँ 'साथी'
हँसते और हँसाते गुज़रे तो आसान हूँ

इन रचनाओं को काव्य संग्रह के लायक बनाने में जो अनमोल सहयोग श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक', श्री भगवती प्रसाद पंचौली और श्री शम्भू दयाल विजय ने किया है उसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ। इस मुक्तक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ज़माने ने पाग़ल समझ कर खारिज़ कर दिया
उनके पाग़लपन ने ही उन्हें वाज़िब कर दिया
इल्म व हुनर का एक वही तो बेताज बादशाह
जिसने वास्ते इल्म अपने को जाहिल कर दिया

तहेदिल से आपका अपना

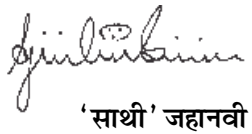

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

ऐसे में ऐसे : एक

धरोहर में धरा
धरा में मौसम
मौसम में ऋतुयें
ऋतुओं में प्रकृति
प्रकृति में पंच तत्व
बादलों में पानी
सूर्य में प्रकाश
चन्द्रमा में शीतलता
झरने में रवानी
नदियों में लहरें
सागर में सरिता
पानी में प्यास
पेड़ों में हरियाली
फल में बीज
बीज में अंकुर
अंकुर में पौधे
पौधे में फूल
फूल में ख़ुश्बू
सावन में फुहार
बसंत में बहार
ज़मीन में जंगल
जंगल में मंगल

खेतों में खलिहान
खलिहान में अन्न
अन्न में सम्पन्न
सम्पन्न में समृद्धि
शरीर में मन
मन में चिंतन
आकार में निराकार
निराकार में निर्विवाद
तप में तपस्या
तपस्या में कर्म
कर्म में धर्म
धर्म में धर्मात्मा
धर्मात्मा में आत्मा
आत्मा में परमात्मा
भक्त में भक्ति
भक्ति में समर्पण
स्वार्थ में निस्वार्थ
निस्वार्थ में परोपकार
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है

वीर में धीर
धीर में गंभीर
युद्ध में बुद्ध
बुद्ध में बोध

क्षमता में क्षमा
क्षमा में उदारता
आचरण में अहिंसा
पश्चाताप में ग्लानि
सच में सच्चाई
राजा में प्रजा
प्रजा में राजा
तंत्र में प्रजातंत्र
व्रत में उपवास
उपहास में हास्य
हँसी में मजाक
नर में नारी
नारी में नर
बहन में बंधन
भाई में सखा
सखा में भाई
माँ में ममता
ममता में दुलार
दुलार में प्यार
प्यार में करुणा
संतान में कन्या
गहनों में शर्मो-हया
पुरुष में पुरुषार्थ
पक्षी में परवाज
नाव में पतवार
जीव में जीवन
जीवन में जवानी
जवानी में कहानी

बच्चों में बचपन
बचपन में चंचलता
चंचलता में मासूमियत
कसाई में दया
दया में भलाई
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है।

ऐसे में ऐसे : दो

आँखों में आँसू
विरह में वेदना
चेतन में चेतना
सोच में संवेदना
महफ़िल में रौनक
भीड़ में अकेले
अकेले में एकांत
एकांत में तन्हाई
शोर में शांति
शांति में क्रांति
विचारों में विरक्ति
कानों में आँखें
आँखों में कान
रंग में रंग
गीत में संगीत
संगीत में सुर-ताल
सुर-ताल में नृत्य
नृत्य में लय की लहरें
सितार में तार
तारों में झंकार
वीणा में वादन
वंदन में चन्दन

दानव में मानव
शत्रु में मित्र
विद्या में ज्ञान
ज्ञान में विज्ञान
प्रेम में परिवार
परिवार में संसार
आदर में सत्कार
सत्कार में परम्परा
परम्पराओं में संस्कार
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है

आशीष में शुभाशीष
कामना में शुभकामना
विफलता में सफलता
धर्म में सद्कर्म
भोजन में भजन
भजन में मगन
विचारों में चिंतन
मनन में मंथन
प्रण में प्रतिज्ञा
अभिमान में स्वाभिमान
तलवार में धार
कमान में तीर
तीर में निशाना

सूरत में सीरत
यात्रा में तीरथ
साधू में सीख
पात्र में भीख
मृत्यु में जीवन
जीवन में मृत्यु
मोह में मोक्ष
राग में अनुराग
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है

आराम में विश्राम
विश्राम में पूर्ण विराम
छाया में शीतलता
छात्र छाया में आश्रय
विरोध में तर्क
तर्क में विवेक
मंत्रणा में गणत्रणा
जनता में जनार्दन
गुरु में शिष्य
रंग में सफ़ेद रंग
भूत में भविष्य
भविष्य में अज्ञात
वर्तमान में वर्तमान
आराधना में साधना

हवन में पवन
पावन में पावन
पवन में पर्व
पर्व में उमंग
भाग्य में कर्म
कर्म में मेहनत
मेहनत में ईमान
व्यवस्था में प्रथा
प्रथा में कथा
कथा में व्यथा
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है

हरी में जन
जन में स्वजन
नर में नारायण
जीवन में दान
दान में कन्या दान
कर्म में कल्याण
शास्त्र में नीति
ग़लती में भूल
भूल में सुधार
सहज में सरल
सामान्य में विशेष
विशेष में निर्मल

कीर्ति में यश
राज में स्वराज
महंत में संत
संग में सत्संग
हार में जीत
जीत में हार
दीन में ईमान
पाप में पुण्य
जीवन में जल
जल में कल-कल
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है

पैरों में पायल
पायल में झंकार
हाथों में कंगन
कंगन में कंचन
माँग में सिंदूर
सिंदूर में सुहागन
सुहागन में सुहाग
गले में मंगल सूत्र
रिश्तों में जीजा-साली
सम्बंधों में देवर-भाभी
रात में सुहागरात
सौंदर्य में सौम्यता

कर्तव्य में अधिकार
आदि में अनादि
अंत में अनन्त
आज़ादी में कैद
बिस्तर में नींद
ग़लती में अनुभव
अनुभव में सीख
सीख में सबक
संतोष में सुख
लगन में प्रेरणा
प्रेरणा में भावना
भावना में कल्पना
कल्पना में कविता
कविता में कथन
कथन में चिंतन
चिंतन में सार
विसृजन में सृजन
सृजन में विकास
रेखा में रेखा चित्र
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है

भूवन में भवन
भवन में आँगन
आँगन में गुलशन

आँचल में करुणा
दीया में बाती
बाती में प्रकाश
मन वास में वनवास
वचन में शपथ
शपथ में प्रण
प्रण में प्रतिज्ञा
दिन में दिन
रात में रात
उधार में उदार
व्यवहार में सदाचार
उधोग में उधम
व्यापार में बरकत
शरारत में शराफ़त
बग़ावत में बहादुरी
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है

कवि में कविता
कविता में करुणा
कलाम में सलाम
चमत्कार में नमस्कार
प्रत्यक्ष में प्रमाण
प्रमाण में सुबूत
सावधानी में सुरक्षा

शब्द में ब्रह्म
ब्रह्म में परम
भोग में उपभोग
सखी में सखा
मीत में मनमीत
गति में सद्गति
भाषा में परिभाषा
निराशा में आशा
आशा में उम्मीद
आस में विश्वास
उत्साह में उमंग
समस्या में समाधान
व्यवधान में निदान
प्रयत्न में प्रयास
प्रवास में निवास
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है

प्रार्थना में आस्था
आस्था में विश्वास
पथ में पथिक
अमीर में फ़क़ीर
फ़क़ीर में अमीर
राग में मल्लहार
असंभव में संभव

प्रयास में संभावना
संभावना में प्रयास
प्रवेश में निषेध
निषेध में आज्ञा
आज्ञा में विनय
भेष में प्रदेश
विदेश में देश
पत्र में सन्देश
संदेश में भाषा
भाषा में अहसास
अहसास में जज़्बात
शेष में विशेष
विशेष में अवशेष
अवशेष में सब कुछ शेष
चाहत में कशिश
कशिश में मिलन
मिलन में मधुरता
मुलाकात में इंतज़ार
इंतज़ार में इंतज़ार
मन में मयूर
दानव में देवता
देवता में मानव
मानव में देवता
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है

चलन में चरित्र
निर्मल में पवित्र
सहज में सरल
अजर में अमर
न्याय में नियम
नियम में न्याय
न्याय में न्यायाधीश
सार्थ में सखा
पार्थ में सारथी
सेवक में संयम
संयम में सेवा
सोच में समझ
समझ में सोच
विशाल में विराट
विधि में विधान
विधान में संविधान
संविधान में समान
समान में समानता
भाग्य में विधाता
विधाता में दाता
दाता में दातार
उपकार में उपहार
उपहार में सदाचार
जगत में जननी
जननी में जगत
कथन में कथानक
कथानक में कथा
कथा में सार
जाँच में परख

परख में जौहरी
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है

नगर में डगर
डगर में सफ़र
सफ़र में हमसफ़र
काल में त्रिकाल
महल में कुटिया
कुटिया में महल
दृश्य में अदृश्य
अदृश्य में दृश्य
भूमि में जन्म भूमि
मिट्ठे में खट्टा
खट्टे में मिट्ठा
नदियों में गंगा
गंगा में चंगा
जल में चरणामृत
सेवा में श्रवण
मर्यादा में राम
समर्पण में लक्ष्मण
पत्नी में सीता
लोभ में पाप
लोक में परलोक
परलोक में लोक
कोख में संतान

संतान में श्रवण
श्रद्धा में सुमन
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है

राग में बेराग
महान में महानता
पुकार में करुणा
प्रेरणा में प्रोत्साहन
आज्ञा में विनय
उत्तेजना में संयम
वर्ष में प्रति वर्ष
अधर्म में अनर्थ
पाप में पतन
पतन में अनीति
बोल में तोल
मोल में भाव
राजा में रंक
रंक में राजा
विरोध में तर्क
होनी में नियति
जब जीवन का
ऐसा आकार है
तब मानव मन में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से
सुन्दर संसार साकार है।

हसीन मौत

ओह! मेरी बदहाल
ख़ुदकुशी की हसीन मौत
तुम मेरे लिये
कितनी सुखद होगी
क्योंकि शराफ़त, मेहनत
और इंसानियत से
ज़लालत और तौहीन की
बदहाल ज़िन्दगी को
हैरानी, परेशानी, हताशा
निराशा और बेचैनी में
हर रोज तड़प-तड़पकर
मर-मरकर जी रहा हूँ
उससे मेरी आत्मा
और शरीर मुक्त हो जायेगे
और मेरी रूह को
चैन और सुकून मिलेगा
मेरी ख़ुदकुशी से
मेरे साथ-साथ उनकों भी
बेशुमार ख़ुशी मिलेगी
जिनकी मनोकामनाओं में
सिर्फ़ और सिर्फ़
मेरी बदहाल ख़ुदकुशी है।

यह कैसी होली

चारों तरफ जल रही है
इंसानियत की होली
हैवानों व शैतानों के संग
मैं किस तरह से खेलूँ होली

रोज गली-गली लुट रही है
सुहागन के सिन्दूर की रोली
हैवानीयत के हादसों के संग
शर्मसार होकर कैसे खेलूँ होली

दहेज़ की चिताओं पर
रोज जल रही है डोली
बेबस मासूम बेटियों को
फिर कैसे बोलूँ 'हैप्पी' होली

दिल व दिमाग़ में नफ़रत
और सूरत है उनकी भोली
शराफ़त के सच्चे रंगों से
मैं प्यार से कैसे खेलूँ होली

व्याकुल विरह की अगन में
जल रहा है मेरा हमजोली

बेबस और बेक़रार होकर
फिर जुदाई में कैसे खेलूँ होली

सरहद पर जवानों के ख़ून से
हर रोज लहूलुहान है गोली
सैनिको के ग़मज़दा परिवार से
ग़मगीन होकर कैसे खेलूँ होली

तन और मन पर नहीं है
मौज़ और मस्ती की चोली
ज़िन्दा लाशों के साथ में
किस तरह से खेलूँ होली

दाने-दाने को मोहताज है
आम आदमी की झोली
उत्साह और उमंग से
किस के संग खेलूँ होली

रंजिश-नफ़रत में रक्त रंजित है
भाईचारे और मज़हब की टोली
दीपावली और ईद मिलन के संग
गले मिलकर कैसे खेलूँ होली

बरसात और सर्द रातों में
सिरों पर नहीं है जर्जर खोली
फुटपाथ पे सोते इन्सानों के संग
बदहाली के साथ कैसे खेलूँ होली

दिलो-दिमाग़ और जुबानों पर नहीं हैं
हमदर्दी और प्यार मुहब्बत की बोली
अपनेपन से फिर किस के संग में
सहज और सरल होकर खेलूँ होली

हररोज बेआबरू होकर सरेआम फट रही है
बेबस और लाचार बहन-बेटियों की चोली
खौफज़दा व ग़मगीन बहन-बेटियों के संग
शर्म से पानी-पानी होकर कैसे खेलूँ होली

मेहनत से भी दो वक़्त की रुखी-सूखी
रोटियों से खाली है इन्सानों की झोली
भूख से तड़प-तड़पकर दम तोड़ते हुये
बेबस इन्सानों के साथ कैसे खेलूँ होली।

सजन ऐसे रंग लगाना

मेरे नाजुक तन और मन को
अपने तन व मन से मिलाना
सजन मेरे कोमल तन-मन को
आहिस्ता-आहिस्ता रंग लगाना

चाहे बिगड़े मेरी बनारसी साड़ी
चाहे भीगे मेरी रेशम की चोली
सजन मेरे तन के रोम-रोम को
ऐसे मदहोश हो कर रंग लगाना

बेक़रार औ बेचैन रहता है मेरा मन
प्रेम अग्न में जल रहा है मेरा तन
सजन मेरे बेसुध तन और मन को
अपनी बाँहों में समाकर रंग लगाना

सतरंगी फूलों से महकता फागुन
ऐसे मौसम में मचलता मेरा यौवन
सजन इस प्रेम दीवानी जोगन को
अपने ही रंग में रंगकर रंग लगाना

मेरी भोली सूरत और चंचल चितवन
मेरा तन और मन है सबका मनभावन

सजन मेरे सहज और सरल जीवन को
निर्मल और पवित्र प्रेम का रंग लगाना

बेबस होकर मैं लाज-शर्म की मारी
सजन दिल से समझो मेरी लाचारी
मैं शर्म से पानी-पानी नहीं हो जाऊँ
मुझे अकेले में चुपके से रंग लगाना

मेरे मन मन्दिर के पवित्र परमात्मा
मेरे रोम-रोम में बसी है तेरी आत्मा
मरे सपनों का सलोना सजन बनकर
माँग में सिन्दूर भर कर रंग लगाना

विरह की वेदना में तन का तड़पना
विचलित व्याकुल मन का मचलना
सजन मेरी जुदाई और इंतज़ार की
मधुर मुलाक़ात बनकर रंग लगाना

अब तो सहन नहीं होती है बेक़रारी
मैंने तन मन से कर ली है तैयारी
सजन इस बार मत करना नादनी
अब अपना ही बनाकर रंग लगाना

मेरी शोख अदाओं के दिलकश इशारे
समझों मेरे तन-मन के प्रियतम प्यारे
सावन और बसन्त के मौसम है न्यारे
सजन मुझे सतरंगी होकर रंग लगाना

तन व मन से बुरा न मानों होली है
सबकी ज़ुबानों पर यही तो बोली है
नाज़ायज भी तो ज़ायज है इस दिन
सजन ऐसी सोच-समझ से रंग लगाना

तुम्हारे होते हुये भी मैं ऐसी बेरी अभागन
सबसे छुपकर के रहती हूँ मन से सुहागन
सजन के बिना अब जीना है नामुमक़िन
अब ज़माने को ख़बर कर के रंग लगाना

मेरे तन और मन पर प्यार की गुलाल
चहरे पर चाहत और क़शिश का जमाल
फिर दिल में कैसा अफ़सोस औ मलाल
सजन अब अपना बनाकर ही रंग लगाना

जो नासमझ
ऐसे अहसास, ईशारों
और भावनाओं को
समझकर भी नहीं समझे
और जायज़ मौके का
फ़ायदा नहीं उठाकर
अपने मन को मन में ही
मसोस कर रह गये
ऐसे सभी अभागे और वंचित
बदनसीब प्रेमियों को
बेहद अफ़सोस
और मलाल के साथ
सहज और सरल

निर्मल और पवित्र
मस्त और हसीन
पावन पर्व होली की
तहेदिल से ग़मगीन शुभकामनायें।

फिर क्यों नहीं

धर्म कोई सा भी हो
सभी धर्मों में
यह परम विश्वास है कि
ईश्वर सर्व शक्तिमान
सर्वव्यापी और अन्तर्यामी है
और गुनहगारों को
उनके द्वारा किये गये गुनाहों की
उचित सज़ा ज़रूर देता है

मगर जब
पवित्र उपासना स्थल
सोच-समझकर तोड़े जाते हैं
पवित्र उपासना स्थलों पर
मासूमों और लाचार के साथ
बलात्कार किये जाते हैं
पवित्र उपासना स्थल
दहशतगर्दों और आंतकियों के
रक्त रंजित साज़िश रचने
और छुपने के स्थान बनते हैं
सार्वजनिक उपासना स्थलों पर बाहुबलियों द्वारा
नाजायज़ कब्ज़े किये जाते हैं

धर्म के नाम पर
बेबस इन्सानों पर
बेरहमी से ज़ुल्मो-सितम
और क़त्ल किये जाते हैं
बेबस और बेजुबान
जीव-जंतुओं का
बेरहमी से बलि देकर
माँस खाया जाता हैं
जबकि प्रकृति के अनुसार
मनुष्य हिंसक जीव नहीं है

मेहनतक़श मज़दूर
और ईमानदार ग़रीब हैं
इनको क्यों नहीं
अपने काम का उचित
प्रतिफल मिलता हैं
साधन-सम्पन्न
और समर्थ के द्वारा
असहाय और बेबस पर
अत्याचार किये जाते हैं

तब अन्तर्यामी, सर्वव्यापी
और शक्तिमान ईश्वर
यह सब बुरे कर्म देखकर भी
क्यों ख़ामोश रहता है
इस वक़्त सर्व शक्तिमान
ईश्वर की प्रतापी शक्तियाँ
कहाँ चली जाती हैं
सर्व शक्तिमान ईश्वर

इन गुनाहगारों को
बुरे कर्म करते वक़्त ही
उचित सज़ा क्यों नहीं देता हैं

क्या इन सब हालातों से
शक्तिमान ईश्वर के
सर्वव्यापी अस्तित्व पर
प्रश्न चिन्ह नहीं लगता है

क्या सर्व शक्तिमान
सर्वव्यापी और अन्तर्यामी ईश्वर
कायर और डरपोक नहीं है

क्या सर्व शक्तिमान ईश्वर
इतना रहम दिल है
जो ऐसे संगीन जुर्म के
गुनहगारों को भी
बिना सज़ा के ही
माफ़ कर देता हैं

जब ईश्वर
इतना दयालु है
और सब कुछ
अच्छा ही करने वाला है
तो फिर किसी भी
अच्छे कर्म
करने वाले के साथ
बुरा क्यों होता है

क्या ईश्वर
मनोकामनायें, ख़्वाहिशें
तमन्नायें पूरी करते हैं
ऐसा नहीं है
क्योंकि बिना कर्म के
फल नहीं मिलता है
और कर्म हीन भक्ति में
वैसे भी कोई
शक्ति नहीं होती है

क्यों हम यह कहकर
दिल को तसल्ली देते हैं कि
जो भी होता है
अच्छा ही तो होता है

क्यों यह कहकर
मन को समझाते हैं कि
यह तो पूर्व जन्म के
बुरे कर्मों के फल हैं

इस आशावादी
सोच और समझ से
क्या हम कायर
और डरपोक नहीं हैं

ख़ुद अपना हाथ
जगन्नाथ नहीं है तो
वो सारे जग में अनाथ है

यहाँ तक की
सर्व शक्तिमान ईश्वर भी
उसका नाथ नहीं है

क्यों नहीं ईश्वर
इस जन्म में ही
गुनहगारों को
सज़ा देता हैं
ताकि इन्सान
बुरे काम करना
बन्द कर दे

जब ईश्वर
सबको सब कुछ
देने वाला है
तो फिर क्यों
ईश्वर को करोड़ो की
भेंट चढ़ाते हैं

जब किसी भी
जीव का जन्म
और मृत्यु
ईश्वर के हाथ में है
तो फिर क्यों
बहुत सारे इन्सान
निसंतान रह जाते हैं
क्यों बहुत सारे इन्सान
अकाल मौत मर आते हैं

किसी भी जीव का
जन्म और मृत्यु
एक निर्धारित
प्राकृतिक प्रक्रिया है
किसी भी जीव का
जन्म, विकास और मृत्यु
पंच तत्वों के उचित
पोषण के मिश्रण से
आकार लेकर
साकार होती है
और पंच तत्वों से
मिलकर ही
प्रकृति का
निर्माण होता है
क्या प्रकृति ही
ईश्वर नहीं है

जन्म के समय
प्राणी मात्र का
जितना वजन होता है
मृत्यु के बाद
दाह संस्कार से
मृत शरीर का
उतना ही वजन
अस्थियों के रूप में
रह जाता है
क्योंकि जीव ने
पंच तत्वों से

जो कुछ भी
ग्रहण किया था
वो सब कुछ ही वापस
पंच तत्वों में मिल जाता है

सर्व शक्तिमान
ईश्वर तो नहीं
हाँ प्रकृति ज़रूर
अपने साथ किये गये
अच्छे और बुरे
कर्मों का फल
हर जीव को
ज़रूर देती हैं
क्या इससे
यह साबित
नहीं हो जाता कि
प्रकृति ईश्वर से बड़ी है

वैसे भी
इस संसार में
लिखित प्राचीन ग्रंथों में
सबसे पुराने ग्रंथ
वेद ही है
और चारों वेदों में
ईश्वर की स्तुति
करने के बजाय
प्रकृति की स्तुति का
चित्रण और वर्णन है

वैसे भी प्रकृति
अपनी सार्थक
उपयोगिता के साथ
साक्षात् दिखाई देती है
क्या इससे
यह साबित
नहीं हो जाता है कि
ईश्वर सिर्फ़ और सिर्फ़
एक काल्पनिक कल्पना है

उपासना स्थलों पर
पूजा और प्रार्थनायें
अधिकतर मोहमाया से
स्वार्थवश की जाती हैं
अगर ईश्वर की
मन से आराधना
तन-मन को
सहज-सरल
निर्मल और पवित्र
वसुधैव कुटम्बकम्
सर्वे भवन्तु सुखिन
सर्वे सन्तु निरामया की
भावना से की जाती है
तो यही अध्यात्म है
जो मोक्ष को
प्राप्त करने का मार्ग है।

जीवन की दास्तान

वैसे तो
ऐसे बहुत सारे
उम्रदराज पेड़
नज़र आ जाते हैं
जो अपने सम्पूर्ण
जीवनकाल में सर्दी, गर्मी, बरसात
शरद, सावन, बसंत
और पतझड़ के
अच्छे-बुरे मौसम देखकर
रूखे-सूखे जर्जर
और बेजान होकर खड़े हैं

कुछ हरे-भरे पेड़
बेरहम वक़्त के हाथों से
बेवक़्त कट कर
अकाल मौत मर जाते हैं

कुछ जवान पेड़
संघर्षों के आंधी-तूफ़ान से
बेवक़्त उखड़ कर
अपना जवान जीवन
तबाह कर लेते हैं

कुछ युवा पेड़
पोषण व्यवस्था में
भेदभाव की
ज़हरली ख़ुराक से
मानसिक कुंठा की
दीमक से खोखले होकर
वक़्त से पहले ही
धराशाही हो जाते हैं

कुछ कमज़ोर पेड़
बिना हवा-पानी
और रोशनी के
पनप नहीं पाते हैं
कुछ असहाय पेड़
बड़े पेड़ों की
छाया में छुपकर
दफ़्न हो जाते हैं
कुछ बेबस पेड़
समर्थ पेड़ों की
तानाशाही कुल्हाड़ी से
कटकर ख़त्म हो जाते हैं

हर तरह की
ख़ुशहाली से आबाद
कुछ हरे-भरे पेड़
हवा, पानी, रोशनी
और ज़मीन को
अपनी जागीर समझते हैं

मगर ऐशो-आराम के जीवन से
निकम्मे और आलसी होकर
बदहाली से रूखे-सूखे
और जर्जर हो जाते हैं

कुछ अक्षम
और कमज़ोर पेड़
हवा, पानी, रोशनी
और ज़मीन पाने की
निरन्तर कोशिश में
मेहनत और ईमानदारी से
हरे-भरे होकर
हर तरह की ख़ुशहाली से
आबाद हो जाते हैं।

मानव बम कोरोना

सबसे अनूठा, अजब,
सनकी और अद्‌भुत
दिखने की लालसा में
सबसे बुद्धिमानी जीव
क़ुदरत का रक्षण
करने वाला मानव
भक्षण से दानव बनकर
प्रकृति से छेड़छाड़
और रहन-सहन
और खान-पान से
इतना ज़्यादा हैवान और
बेरहम शैतान होकर
ख़ुद मानव जाति के लिए
सभ्य और संस्कारी मानव
इतना ख़तरनाक हो गया

हालात इतने बेकाबू
और बदहाल हो जायेंगे की
ख़ुद मानव एक-दूसरे के लिये
कीटाणु और जीवाणु से
मानव बम बनकर के
आत्मघाती दानव हो गया

साधन-सम्पन्न
और हर तरह से
समर्थ और सभ्य इन्सान
बेरहम जुदाई और तन्हाई में
इन्सान से मिलने को तरस गये
घायल प्रकृति के आँसू
कहर बनकर बरस गये

न कोई रोने वाला
न कोई खाने वाला
इतना बेबस और बेचारा
बदनसीब मानव है
प्रकृति का अंधा धुंध
दोहन और शोषण
करने वाला दानव है

हैवान और शैतान इन्सान
अब घातक हथियारों से नहीं
तोप-गोला और बारूद से नहीं
अणु और परमाणु बमों से भी नहीं
हर तरह से सुरक्षित इन्सान
अब बहुत ही आसानी से मरेगा
प्रकृति से नाज़ायज छेड़खानी में

ख़ुद के पैदा किये
कीटाणु और विषाणु से
जान पर बन आयेगी
त्राहि-त्राहि मचेगी

महामारी के कोहराम से
फिर एक महाभारत होगा
जिसमें अस्त्रों और शास्त्रों से नहीं
ख़ुद के कर्मों से इन्सान
अपने आप बेहिसाब मरेगा
तब ख़ुद मानव ख़ुद के लिये
आत्मघाती मानव बम साबित होगा

माना की प्रकृति
सोने-चाँदी और हीरे-जवाहरात
और अन्य अनमोल सम्पदा का
बेशुमार बहुमूल्य भण्डार है
मगर मोहमाया में जकड़कर
छलावे और लूट में सोने का मृग नहीं,
जब राम जैसे सीधे-सादे
इन्सान भी छले जायेंगे
तो फिर अनगिनत धन पिपासु
लालची रावणों का क्या होगा
फिर क़ुदरत के नाज़ायज
दोहन और शोषण से बनी
सोने की लंका जलाई जायेगी
फिर नादान इन्सान के
अफ़सोस और मलाल से क्या होगा
वही होगा जो क़ुदरत के कहर से
प्रकृति के इन्साफ़ को मंजूर होगा

इस महामारी से बचाने को
ईश्वर भी नहीं आयेंगे

तब ईश्वर के देवदूत
पंच तत्वों का
संरक्षण करना होगा
पंच तत्वों के
उचित उपयोग का
पालन करना होगा
वर्ना तो इस धरती पर
प्रकृति के महाप्रलय से
इन्सान का महाविनाश होगा
बदहाली और भुखमरी से
मौत और हत्या के आतंक से
यमराज के यमदूतों का
सरेआम नंगा नाच होगा

जब इन्सान प्रकृति में
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की
अवधारणा नहीं रखेगा
तब शिव का तीसरा नेत्र खुलेगा
हर तरफ बदहाली का
तूफ़ान और जलजला होगा
तब मानव की शक़्ल में दानव
क़ुदरत के हाथों बेमौत मारा जायेगा

इन्सान ऐसे-ऐसे
जीव-जंतुओं को खा रहा है
उनको देखने मात्र से ही
गिन्न और उलटी हो जाये
मगर ऐसे जीव-जंतुओं को

निर्मम तरीके से खाकर
इन्सान जानवरों से भी बदतर
हैवान और शैतान जानवर हो गया है

बहुत तेज रफ़्तार से
दौड़ने वाला इन्सान
बहुत ऊँची उड़ान
भरने वाला इन्सान
प्रकृति के प्रकोप से
डर और हार कर
भीगी बिल्ली की तरह
कायर चूहा बन कर
बिलों में कैद हो गया है
जो इन्सान कहते थे की
मरने तक की फुर्सत नहीं है
वो इन्सान ही आज
मरने के डर से फुर्सत में है

सड़के वीरान है
गली-मोहल्ले सुनसान है
क़स्बे और शहर श्मशान है
देश मौत का खुला मैदान है
हर तरफ लाइलाज
कोरोना के कोहराम का
मचा हुआ महा संग्राम है

अत्याधुनिक तकनीक भी
बेकार और बकवास है

यह सोच और समझकर
बेबस इन्सान हैरानी
और हताशा से उदास है
अब तो सिर्फ़ और सिर्फ़
प्रकृति पर ही विश्वास है
सूर्य का प्रकाश
और शजर की छाया ही
एक मात्र उपचार है
सूरज और शजर ही तो
सारे जगत के पालनहार हैं
सूरज और शजर ही
प्रकृति के देवदूत में
ईश्वर के अवतार हैं

प्रकृति के अत्यधिक और
अनुचित दोहन और शोषण के
अपने बुरे कर्मों से इन्सान
घर की चारदीवारी में
महामारी के खौफ़ से क़ैद हैं
पशु-पक्षी और जीव-जन्तु
मौसम और प्रकृति के नजदीक
ताल-मेल से रह कर
बेख़ौफ़ और ख़ुशहाली से
मस्त होकर आज़ाद हैं

सभ्य और संस्कारी बनने की
चाहत और अभिलाषा में
प्रकृति से छेड़ख़ानी करने से

आधुनिक जीवन शैली अभिशाप है
अमीर होने की चाहत में
अनमोल क़ुदरत को लूटकर
सहज-सरल और निर्मल-पवित्र
जीवन को खोने का पशच्यााताप है

पुराने ज़माने में
लौटने के लिये बेक़रार है
प्रकृति के साथ रहने में ही
जीवन का अनमोल सार है
संतोषी ही तो सदा सुखी
यही तो मानव के लिये
ख़ुशहाल जीवन का
एक मात्र सदाचार है
वर्ना तो बेबस इन्सान
हर रोज मर-मरकर
जीने के लिये लाचार है

प्रकृति ने हमें जन्म दिया
और हमनें उसे बर्बाद किया
यह प्रकृति के अपमान का
गंभीर और भयानक परिणाम है
मानव जाति के विनाश का
प्रत्यक्ष होता ज़िन्दा प्रमाण है
प्रकृति को हमें समझाना होगा
चिंतन और मनन करना होगा
हमें जीवन शैली को
अनुशासित करना होगा

दिनचर्या में बदलाव करना होगा
खान-पान में रसायन से
मानव जीवन ज़हरीला है
प्रदूषित वातावरण से
घर और परिवार विषैला है
रोग प्रतिरोधक क्षमता
जीवन शैली से कमजोर है
हर तरफ बीमारियों का शोर है
आलसी और निकम्मा
इन्सान कामचोर है
घायल प्रकृति की
अपनी संतानों से
ममता और करुणा से
भरी हुई स्नेह की पुकार है
संतानें भले ही बेवफ़ा हो जाये
मगर माँ की शरण में
जब भी जाओगे तो
बुरे वक़्त में भी हमेशा
ममता, प्यार और दुलार है

मांसहारी खान-पान
और आधुनिक जीवन शैली के
रहन-सहन की वजह से
महामारी फैलाने के तरीको ने
यह कई बार प्रमाण सहित
साबित कर दिया है कि
शुद्ध, सात्विक, शाकाहारी
पोष्टिक, स्वादिष्ट, प्राकृतिक

खान-पान और रहन-सहन से
सनातन धर्म संस्कृति ही
मानव मात्र के लिये
सबसे सुरक्षित, स्वस्थ
निरोगी, आरामदायक
और सुखी जीवन पद्धति है
और यही जीवन शैली
सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् है

कर लो अपने तन-मन
और दिलो-दिमाग़ की शुद्दी
वर्ना विनाश काले विपरीत बुद्धि
सहज और सरल हो जाओ
निर्मल और पवित्र हो जाओ
इन्सान की शक़्ल और सीरत में
प्रकृति के देवदूत हो जाओ
वर्ना तो जानलेवा कीटाणुओं
और विषाणुओं के संक्रमण से
बेवक़्त बेमौत मर जाओ।

इन्कलाब ज़िन्दाबाद

(एक)

अंग्रेजी सरकार का
संसार में कभी भी
अस्त नहीं होने वाला सूरज
क्रांतिकारियों की ज़िन्दगी से तो
डरकर खौफ़ज़दा था ही
क्रांतिकारियों की मौत से
घबराकर और डरकर भी
इतना कायर हो गया कि
समय से पूर्व ही बेवक़्त अस्त होकर
कलंक से भी काली
अँधेरी रात हो गया

बेवक़्त फाँसी देकर
नियमों और क़ानूनों को
अपने फटे और मेले
गिरेबान में दफ़्न करके
ज़ालिम कायर और डरपोक
हैवान और शैतान से भी
गया गुज़रा हो कर
चुल्लू भर पानी में डूबकर
जलील और शर्मसार हो गया

शहादत ऐसी कि
वतन के लिये
ज़िन्दगी बन गई
ज़िन्दगी ऐसी कि
अजर और अमर
कहानी बन गई,
इन्सानों को तो
ख़त्म कर सकते हो
इन्सान के विचारों को नहीं
क्रन्तिकारी देश भक्त तो
फाँसी पर चढ़ा दिये
मगर उनकी शहादत
वतन के लिये
आज़ादी की क्रांति बन गई

बेबुनियाद आरोपों से
फाँसी की सज़ा का
अफ़सोस और मलाल नहीं
गुनाहों से डरने का
दिलो-दिमाग़ में ख़याल नहीं,
अंग्रेज़ों के जहन में
ख़ौफ़नाक दहशत का
ज़िन्दा सवाल हो गये
जुल्म और सितम के खिलाफ़
इन्कलाब ज़िन्दाबाद से
क्रांतिकारियों के लिये
ज़िन्दा मिसाल हो गये

(दो)

कायर होकर अन्याय
और अत्याचार सहना नहीं
बुजदिल की कायर
मौत मरना नहीं
बिना मान-सम्मान
स्वाभिमान के जीना नहीं
कायर अंग्रेजों के
सामने छुकना नहीं
भारत माँ के सिवा
किसी को सलाम करना नहीं
वतन के लिये शहादत
अजर और अमर है
शहीदों का वतन के लिये मरना
मरकर भी तो मरना नहीं

जेल की ज़ंजीरो
और लोहे की सलाखों में भी
क्रांतिकारी बंधक नहीं
देशभक्तों के सीने छलनी करदे
अंग्रेजों के पास वो बंदूक नहीं

क्रांति की मशाल
इन्कलाब का ख़याल
आज़ादी का सवाल
दिल में गुलामी का मलाल
जुल्मो-सितम से बेहाल
दिमाग़ में नाइंसाफ़ी का बवाल

फिर तो एक दिन
ज़रूर होना ही था
अंग्रेजों की संसद में धमाल

जेलों में बन्ध
शेरों की भी
ऐसी दहाड़ थी
कायर अंग्रेजों के लिये
शहीदों की ज़िन्दगी
मुसीबत का पहाड़ थी
उन्नहतर दिनों के सत्याग्रह की
भूख और प्यास भी
क्रांतिकारियों के दिलों में
जीती जागती ज़िन्दा इन्कलाब थी
जय हिन्द, इन्कलाब ज़िन्दाबाद।

बेज़ुबान जानवर

हर तरह से समर्थ
और साधन-सम्पन्न
बेबस इन्सान भी
हैरानी और हताशा से
जब बँटवारे के वक़्त
मज़बूर और लाचार होकर
अपनी जान बचाकर
बेतहाशा भाग रहे थे

जब मासूम बच्चों
असहाय बुजर्गों
बेबस बहन-बेटियों
और औरतों का भी
प्रशासन, पुलिस
और सेना की मदद
और षड्यन्त्र से
बेरहम ज़ालिम हाथों से
कत्लेआम हो रहा था

जब हर घर-परिवार में
कम से कम से
चार-पांच जानवर

हर घर में हुआ करते थे
जो लाखों परिवारों में
करोड़ों की संख्या में थे

तब उन गायों
और अन्य जानवरों को
जिन्हें नाम से पुकार कर
घर के सदस्यों की तरह
घरों में रखा जाता था,
उन बेकुसूर और बेबस
बेज़ुबान जानवरों की
करुण चीख पुकार को
कौन सुनने वाला था

भले ही बेबस
बेज़ुबान जानवर
मानव मात्र के लिये
अनमोल और उपयोगी
और सहयोगी साधन होकर
बेशकीमती पशुधन थे

फिर भी बेकुसूर और बेबस
बेज़ुबान जानवर मज़बूर थे
उन बेरहम ज़ालिम हाथों से
निर्मम क़त्ल होने के लिये
जिनके धर्म में गौ हत्या
और इन बेबस बेज़ुबान
जानवरों का क़त्ल

पवित्र और पुण्य का काम था
और इन बेकुसूर
और बेबस बेज़ुबान
जानवरों का माँस
उनका पोष्टिक और
स्वादिष्ट भोजन था

उन बेरहम और ज़ालिम
इन्सानों की तो
क़िस्मत ही खुल गई
क्योंकि उन इन्सानों को
मुफ़्त में ही
बेबस और बेज़ुबान
बेशुमार जानवरों का
बेरहम क़त्ल करके
बेहिसाब पुण्य कमाने का
उचित अवसर मिल गया

बेबस बेज़ुबान जानवरों के लिये
ऐसी सोच और समझ दुराचार है
पशुधन की अनमोल उपयोगिता से
जीवन में ख़ुशहाली का सदाचार है

ईश्वर उन बेकुसूर
बेबस और बेज़ुबान
जानवरों की आत्मा को
शांति प्रदान करे
ॐ शांति ॐ, ॐ शांति ॐ

सच और सपने

सोते हुये नींद के सपने
अवचेतन मन की चेतना
जागते हुये दिन के सपने
चेतन मन की चेतना

दोनों में ही विद्यमान है
मानव मन की कल्पना
एक में कोरी कल्पना
दूसरे में कर्म की संकल्पना
अच्छे सपने सबके मनभावन
बुरे सपनों में बस एक दुर्भावना

सपनों में हक़ीकत नहीं होती
और हक़ीकतों में सपने नहीं होते
हक़ीकतों में तो सच ही होता है
अगर सच के सच में शंका है
तो उस शंका का समाधान है
समाधान के लिये पूरा विधान है
और शंका का सम्पूर्ण निधान है

सपनों में बिना सिर-पैर की
बेकार और बचकानी बातें हैं

जागते हुये दिन के उजाले में भी
गहरी और अँधेरी काली रातें हैं

सच में सूर्य का प्रकाश है
मेहनत से कर्म का उजास है
दीन और ईमान से झक्कास है
जीवन में हर दिन सुप्रवास है

सच दुनियादारी से बेख़बर
मस्ती में मस्त और व्यस्त है
लुभावने और लालची सपने
सांसारिक मोहमाया में जकड़कर
ख़ुदगर्ज़ी से मकड़ी के जाले में
सुस्ती से सुस्त और अस्त है

सपनों में कुकर्मों से
मोह का मार्ग है
सच में सत्कर्मों से
मोक्ष का मार्ग है

सपनों में नाज़ायज लोभ-लालच से
मोहमाया के साम्राज्य का विस्तार है
सच में जो कुछ भी अपने पास है
उसका भी त्याग से परोपकार है

सच में इन्सान के
सम्मान का गागर है
आकार में छोटा है

फिर भी आदर है
सपनों का कोई भी
ओर है न कोई छोर है
बिना काम का बेकार
खारे पानी का सागर है
मायावी मन में उठती
लहरों के आँधी तूफ़ान से
विचलित और व्याकुल
मन के सागर में
इच्छाओं का उठता शोर है
जिस पर सच की
पतवार का चलता नहीं जोर है

सच से मानव जीवन में
सुख और शांति का ठहराव है
सपनों से तन-मन में बेक़रारी
और बेचैनी का भटकाव है

सच में जोशो-जुनून
और उत्साह-उमंग है
सपने रंग में भंग से
कुरूप और बदरंग है

सच में कुछ भी नहीं होकर
सुखी जीवन का संतोष है
सपनों में बहुत कुछ होकर भी
कुछ कम होने का अफ़सोस है

सच की तन्हाई में मन के
चैन और सुकून का एकांत है
सपनों की भारी भीड़ में भी
अकेलेपन से मन का देहांत है

सच में दिलो-दिमाग़ का
सच्चा चैन और सुकून है
सपनों में तेज रफ़्तार से
बेचैनी में जीवन का ख़ून है

सच में रिश्तों के अपनेपन से
सबके सब घर और परिवार है
सपनों में मानव की ख़ुदगर्ज़ी से
अपनों से भी पराया व्यवहार है

सच प्यासे की प्यास में
बहता हुआ निर्मल झरना है
सपने पानी की आस में
रेगिस्तानी रेत का सपना है

सच इन्सानियत के आचरण से
दीनो-ईमान का धर्म और वफ़ा है
सपनों में शैतानीयत की सोच से
बेईमानी, धोखा और ज़फ़ा है

सच में नटखट मासूमियत से
निर्मल और निश्छल बचपन है
सपनों में छल और कपट के
नापाक ईरादों में झकड़ा बंधन है

सच मेहनत और ईमानदारी से
तप-तप कर सोने में कंचन है
सपने नकली चमक-धमक से
घटिया और बिकाऊ जीवन है

सच सात सुरों के संगम से
मधुर गीत-संगीत का गुंजन है
सपने टूटे तारों के सितार से
कर्कश और बेसुरा क्रंदन है

सच में जुल्मो-सितम के ख़िलाफ़
जोश और जुनून का आक्रोश है
सपनों में खिसयानी बिल्ली का
नकली गुस्से से भरा हुआ क्रोध है

सच में शुभ व निर्मल भावनाओं से
पवित्र शुभकामनाओं का सन्देश है
सपनों में स्वार्थ की दुर्भावनाओं में
रंजिश से दूषित रिश्तों में कलेश है

सच में नेकी और भलाई से
सच्चाई मस्त और मदहोश है
सपने झूठ, फ़रेब और धोखे से
ख़ुदगर्ज़ी में घायल औ बेहोश है

सच माता-पिता के कर्म से
निष्ठा-कर्तव्य का वर्तमान है
सपने फल की अभिलाषा में
कर्म हीन नालायक संतान है।

गुलामी की आज़ादी

खाने और पीने
आने और जाने
घूमने और फिरने
मिलने और जुलने
खेलने और कूदने
पढ़ने और लिखने
सोचने और बोलने
सुनने और सुनाने
सोने और जागने
रहने और पहनने
सजने और सँवरने
मनचाही संपत्ति खरीदने
मनचाहा निवेश करने
पसंद या धर्म से विवाह करने
मनचाहे बच्चे पैदा करने
खेती और किसानी करने
व्यापार और रोजगार करने

पूजा स्थल बनाने
धर्म को मानने
धर्म का प्रचार
और प्रसार करने

प्रार्थना, साधना और आराधना करने
संस्कारों और परम्पराओं का
धर्म से निर्वहन करने
रीति और रिवाजों का
मन से पालन करने सहित
इतनी सारी आज़ादी
देश के हर नागरिक को है
चाहे वो ग़रीब हो या अमीर हो
चाहे वो किसी भी जाति, धर्म
और मत से सम्बंध रखता हो

इतनी सारी आज़ादी वाले
प्रजातांत्रिक देश भारत में
अब हमें, फिर कौन सी
और कैसी आज़ादी चाहिये

लोकतांत्रिक तरीके से
जनता द्वारा चुनी हुई
केंद्र और राज्यों में
बहुमत की सरकारें होती हैं
जिसमें जनता पर शासन
जनता के द्वारा किया जाता है
सरकारों में जनकल्याण की
सर्वमान्य योजनायें ही होती हैं
निर्धन और अल्पसंख्यों के
हितों की आवाज़ें होती हैं
सबूतों और गवाहों से
उचित न्याय प्रक्रियायें होती हैं

अन्याय और अत्याचार
अपराधों से समाज में
अराजकता रोकने के लिये
कानून, पुलिस और प्रशासन है
और सबसे बढ़कर देश में
धर्म निरपेक्ष संविधान है
जिसमें सबको समान
और समानता का अधिकार है
जिसमें कर्तव्य भी है
अगर हम कर्तव्यों को
नहीं भी निभाना चाहे
तब भी जुल्म और सितम का
अधिकार तो किसी को भी नहीं है
तब फिर हमें कौन सी
और कैसी गुलामी से
कैसी और कौन सी आज़ादी चाहिये

क्या इस आज़ादी के बहाने से
स्वार्थ के षडयंत्र में
रंजिश और नफ़रत की
रक्त रंजित साज़िश तो नहीं,
क्या इस स्वार्थ के शतरंज में
हम भोले-भाले इन्सान
किसी के ख़ुदगर्ज़ दिमाग़ से
छल-कपट के मोहरे तो नहीं

क्या हमारे धर्म के
दीन और ईमान नहीं

क्या हम भोले-भाले इन्सान
इस तथा कथित आज़ादी में
किसी की बदनीयत ईरादों में
नापाक साज़िश की सोच तो नहीं,
क्या हम भोले-भाले इन्सान
किसी के फ़ायदे के लिये
भेड़ और बकरियों की तरह
मानव मंडी का बाज़ार तो नहीं

क्या हम जुल्म सहकर
दो वक़्त की रुखी
और सूखी रोटी के लिये
बंधुआ मज़दूरी से
बिना वेतन के कामदार तो नहीं,
क्या हम अमीरों की
शान और शौक़त में
भूख और प्यास से
कठपुतली की तरह नाचकर
उनके स्वार्थ में ईशारों के
गुलाम और सेवादार तो नहीं

क्या हमारे दिल
और दिमाग़ में
अच्छा और बुरा
सोचने समझने की
कुछ भी क्षमता नहीं,
अगर क्षमता नहीं
तो मन के मालिक नहीं

तो फिर हम मानसिक गुलाम हैं
जो जानवरों से भी बदतर
और बेकार जीव में इन्सान है
क्योंकि मन से ही तो
मानव के जीवन सफ़र का
मनचाहा सृजन और विसृजन
निर्माण और विध्वंस होता है।

जीवन के रंग

जज़्बात की कश्ती
अहसास की लहरें
जुदाई के तूफ़ान
जीवन के सागर में
चाहत बिना पतवार

आशा का प्रकाश
इंतज़ार का प्रकाश
डूबता हुआ प्रकाश
जीवन में हर दिन
प्रकाश का अंधकार

निराशा की रोशनी
हताशा की रोशनी
बेचैनी की रोशनी
जीवन में हर रात
रोशनी का बेक़रार

सुनसान मकान
सूना आँगन
वीरान कमरा
जीवन की चारदीवारी
सन्नाटे की खरपतवार

शिव की साधना
विष्णु का मौन
ब्रह्मा का तप
जीवन में प्रेम मार्ग
आकार में निराकार

मन में मूरत
दिल में मंदिर
रोम-रोम में भक्ति
जीवन में आत्मा
ईश्वर का अवतार

राधा में विरह
मीरा में विरह
सीता में विरह
जीवन की वेदना में
विरह ही साकार

आँखों में मेघ राग
तन में दीपक राग
मन में विरह राग
जीवन का संगीत
ऐसे सुरों का संसार

भूतकाल के सपने
वर्तमान में सपने
भविष्य के सपने
जीवन में दिन-रात
सपनों का संसार

आकाश की सोच
धरती की सोच
पाताल की सोच
जीवन और मृत्यु में
त्रिलोक का सदाचार

निष्काम कर्म
कर्म में धर्म
धर्म में मर्म
जीवन का सार
गीता का सार

आँखों में दृष्टि
तो आँखों में सृष्टि
फिर दृश्यों की पुष्टि
जीवन का वृतांत
दृष्टान्त से सरोकार

पानी से भाप
भाप से पानी
फिर पानी से भाप
जीवन में आत्मा
शरीर में बारम्बार

सुख में सुखी
दु:ख में दुखी
सुख में दुखी
जीवन में सुख-दु:ख
सोच में विकार

मोह में माया
काया में माया
साया में माया
जीवन में जीवन
माया से सरोकार

तन में मोक्ष
मन में मोक्ष
धन में मोक्ष
जीवन में मोह
मोह का सदाचार

मन की भाषा
आँखों की भाषा
बेज़ुबान की भाषा
जीवन में शब्द
मौन का शिष्टाचार

सुहागन माँग में सिंदूर
सूनी माँग में सिंदूर
सुहागन, बिना सिंदूर
जीवन में मन से सुहाग
मन के सुहाग का शृंगार

आँखों में कान
कानों में आँखें
बेज़ुबान के ईशारे
जीवन में ज़ुबान
ज़ुबान में समाचार

परीक्षा में इम्तिहान
विपदा में सावधान
दुविधा में समाधान
जीवन का इत्मिनान
सिर्फ़ ज्ञान का अख़बार

कर्म में शक्ति
शक्ति से भक्ति
मेहरबानी से मुक्ति
जीवन में जगन्नाथ
कर्म ही एक मात्र द्वार

सावन की फुहार
बसंत की बहार
सर्दी और गर्मी
जीवन में ऋतु चक्र
प्रकृति से प्यार

आँखें दिखाना,
आँखें छुकाना
आँखें खोलना
जीवन का नज़रिया
आँखों के अनुसार

देखने में जानना
सुनने में समझना
पढ़ने में परखना
जीवन के यह शास्त्र
निरपेक्ष ज्ञान के भण्डार

विचारों की गति
कभी सद्गति
तो कभी दुर्गति
जीवन की गति
आचरण का विचार

आत्मिक भाव
सात्विक भाव
सांसारिक भाव
जीवन के भाव
भावनाओं का संचार

ज़मीन में जड़
जड़ में चेतना
चेतना में संवेदना
जीवन का धरातल
जीवन का ही व्यवहार

पैदल से बैलगाड़ी
बैलगाड़ी से मोटर गाड़ी
मोटरगाड़ी से रेल गाड़ी
जीवन में भागदौड़
जानलेवा होती रफ़्तार

आँखों में वर्तमान
कानों से भूतकाल
मन से भविष्य काल
जीवन का चलचित्र
त्रिकाल का चित्रहार

मन में आदर
मन में निरादर
मन से तटस्थ
मन की भावना
मन ही आधार

मन में चोर
तो मन में शोर
फिर मन में लोभ
जीवन में मृग तृष्णा
असंतोष का हाहाकार

अतीत पर शोक नहीं
भविष्य की शंका नहीं
वर्तमान पर शक नहीं
जीवन में जीवन दर्शन
जो हो रहा है, वो स्वीकार

संतान से सुख
जो मैंने दिया
वही मुझे मिलेगा
जीवन की बुनियाद
नींव के अनुसार

मानव या दानव
जैसा खावे अन्न
वैसा होवे मन
जीवन में प्रवृति
अन्न के प्रकार

जीवन में मज़ा
मज़ा में सज़ा
सज़ा में कज़ा
जीवन क़ैदखाना
मौज से गुनहगार

मन में काश
मन में प्रकाश
मन से प्रयास
जीवन में सफलता
प्रयास की हक़दार

जैसा है देश
वैसा ही भेष
मन में प्रवेश
जीवन का परिवेश
संस्कृति से सरोकार

अर्थ के दान का मोल
कर्म दान का भी मोल
धर्म का दान अनमोल
जीवन में जीवन दान
क्षमा वीरस्य सदाचार

पाप से पतन
पतन से अनीति
अनीति से विनाश
जीवन में नीति
कर्म के अनुसार

हम उम्र से प्यार
बड़ों से दुलार
छोटो से सत्कार
जीवन का चरित्र
चरित्र का संस्कार

चाहत बेशुमार
विवशता विकराल
विवशता में सदाचार
जीवन में विवशता
घुट–घुटकर जीने को लाचार

संवाद में तर्क
तर्क में भाषा
भाषा में गरिमा
जीवन का संवाद
समझ का विचार

विषय की सार्थकता
विवेक की सतर्कता
विचार की सरलता
जीवन में अभिव्यक्ति
समरस और समझदार

बचपन में पचपन
पचपन में निन्यानवे
और सौ बरस हुये पूरे
जीवन में अफ़सोस
नहीं जिया उम्रानुसार

स्पर्धा में प्रतिस्पर्धा
मूल्य से मूल्याकंन
सम्बंधो में स्वार्थ
जीवन का आचरण
व्यवहार में व्यापार।

लॉक डाउन

हम असहाय
ग़रीबों के लिये
यह विधाता क्यों
इतना बेरहम हो जाता है
दो वक़्त की रुखी-सूखी
रोजी-रोटी के लिये
अपना गाँव और शहर भी
विदेश हो जाता है

जर्जर झोंपड़ियों
और ख़स्ताहाल मकानों में
बेहाल और बदहाली से
फटेहाल जीवन में
खास अपने रिश्ते-नाते भी
दूर और अंजान होकर
पराये हो जाते हैं
यह सही है कि
मुसीबत में ख़ुद अपनी
शरीर की परछाई भी
शरीर का साथ छोड़ देती है

लॉक डाउन की वजह से
शहरों के ऑफिस, दुकानों
और कारखानों के करोड़ों
मज़दूर और कर्मचारी बेरोजगार है
गाँवों में मशीनों की वजह से
अब तो खेती-किसानी में
बंधुआ मज़दूरी भी नहीं,
कभी बेमौसम की
बरसात बेहरम है
तो कभी सूखा
और अकाल मेहरबान है
रोते-सिसकते हम ग़रीबों के
कुचले हुये अरमान है
हमारी मेहनत के तरकस में
अब तो जंग लगे
तीर और कमान भी नहीं

उत्साह और उमंगों का
अब तो विचार भी नहीं
अब तो हमारे कोई भी
तीज और त्यौहार भी नहीं
शहरों में अब कोई भी
व्यापार और रोजगार नहीं
अमीरों के दिलों में
हमारी भूख और प्यास का
कुछ भी तो सदाचार नहीं
वैसे भी अब तो
उजड़े और बंजर गांवों में

कुछ भी तो रोजगार नहीं
मन के उजड़े चमन में
ख़ुशियों की बहार नहीं
मज़दूरों के घरों में
श्मशान सा वीराना है
सबके घरों में
रोजी-रोटी के गम का
दर्द भरा तराना है
जवान पैरों में
पायल की झंकार नहीं
बारिश के मौसम में भी
चैन और सुकून की फुहार नहीं

न तो ख़ुद का
कोई वर्तमान है
और न ही
बच्चों का भविष्य है
जवान बेटी के हाथ
बिना सुहाग के सूने है
माँ और बाप के
अर्पण और तर्पण अधूरे है

सिर्फ़ और सिर्फ़
सेठ और साहूकारों
ज़मीदारों और महाजनों के
पक्के बही खातों में
गहनों, घरों और ज़मीनों की
गिरवी के कागजात से
हिसाब और किताब पूरे हैं

सरकारी मदद
ऊँट के मुँह में जीरा है
गाँवों में न कोई
शासन और प्रशासन है
और न ही कोई
कानून और पुलिस है
जिसकी लाठी उसकी भैंस है

अराजकता में
अपराधों की भरमार है
चोरी, लूट और हत्या
चोराहों पर
सरे-बाज़ार है
बेबस इन्सान का
बिकता ख़ून सरे-आम है
उजड़े गाँवों में शेष
एक यही तो काम है
गाँवों में बिकता हुआ
बेबस मज़दूर सामान है
धन्धे में बरकत से
सिर्फ़ यही तो
एक चलती दुकान है

नशे, जुये और
सट्टे के अड्डे
मज़दूरों के मकान हैं
जिस पर पुलिस
हफ़्ता वसूली से
मददगार और मेहरबान है

सर पर मंडराती
मौत का साया है
बेरहम ख़ुदकुशी से
मरने के लिये जर्जर काया है
समस्याओं के आँधी-तूफ़ान की
उफनती लहरों के सागर में
साधनों की कश्ती बिना पतवार है

मासूम और नटखट बच्चे
वक़्त से पहले
ज़िम्मेदार होकर
बच्चों में बचपन नहीं
औरतों के होठों पर
सुबह और शाम को
मंगलाचार के गीत नहीं
मोहल्लों में हँसी
मजाक की बातें नहीं
गाँव की चौपालों पर
लोक गीतों का संगीत नहीं
बहन और बेटियों को
सजने और सँवरने का चाव नहीं
सुहागनों के तन-मन पर
सुहाग का श्रृंगार नहीं
घरों में औरतों के पास
गृहस्थी के काम और सामान नहीं

कोरोना महामारी में
लॉक डाउन की वजह से

सैकड़ों मील की दूरी का
नंगे पैर पैदल बेरहम सफ़र
बिना साधन के शैतान है
ज़ालिम भूख और प्यास
पापी पेट के लिये हैवान है
दया और भीख पर ज़िन्दा
बेबस मज़दूर मेहनती जवान है
सन्नाटे से सुनसान और वीरान
जर्जर मज़दूर के मकान हैं
मज़दूर की चिंताओं में
अनहोनी का सारा जहान है

प्रशासन की
अराजकता में
मज़दूरों का दुश्मन
यह ज़ालिम लॉक डाउन
अपराधों की वजह से
कहीं अनिश्चित काल के
जानलेवा कर्फ्यू में
नहीं बदल जाये
लॉक डाउन में तो फिर भी
दया और भीख से ज़िन्दा
असहाय और निर्धन
ग़रीब मज़दूरों का परिवार है
जानलेवा कर्फ्यू में तो
ज़ालिम भूख-प्यास और
बेरोजगारी की महामारी से
हर कोई लाइलाज बीमार है

हमारा बेरहम ख़ुदकुशी से
बेमौत मरना ही तो
उजड़े और वीरान
गाँवों और शहरों में
एक मात्र पक्का उपचार है।

ज़ालिम ज़िन्दगी

पापी पेट के लिये
बेबस और लाचार होकर
टूटे हाथों से भी
दो वक़्त की रूखी
और सूखी रोटी के लिये
मेहनत-मज़दूरी में
पत्थर तुड़वाती ज़िन्दगी

दुर्घटना और बीमारी में
काम से महीनों के विश्राम को
साधन-सम्पन्न अमीरों के लिये
ख़ूबसूरत आराम करने का
बहाना बनाती ज़िन्दगी है

ग़रीब और मज़दूर के लिये
गंभीर दुर्घटना और बीमारी में
एक दिन के आराम को भी
रोजी-रोटी का संकट बनकर
आराम को हराम मानकर
आपदा और विपदा से
क़यामत बनाती ज़िन्दगी

महज ज़िन्दा रहने की
लाचारी में ग़रीबों से
जिनके जर्जर बदन में
ज़िन्दा रहने लायक भी
पर्याप्त ख़ून नहीं है
उनको भी बेबस होकर
ख़ून बिकवाती ज़िन्दगी

घर और परिवार की
ज़िन्दा रहने लायक
अतिआवश्यक ज़रूरतें
इतनी बेशर्म और ज़ालिम
हो जाती है कि
शर्मो-हया को भी
बेहद शर्मसार होकर
बदन बिकवाती ज़िन्दगी

भूख-प्यास से बेहाल
कलेजे के टुकड़े
जर्जर बदन के बच्चों को
दिल पर पत्थर रखकर
लावारिस कराती ज़िन्दगी

दीन और ईमान ही
जिनका एकमात्र धर्म है
हालातों से बेबस होकर
बहुत सस्ते में बिककर
मेहनती और ईमानदार को
बेईमान बनाती ज़िन्दगी

ज़िन्दा रहने के लिये
बहुत ज़रूरी हैं जो अंग
ग़रीब से तंग आकर
अनमोल ज़िन्दगी को
सस्ते दाँव पर लगाती ज़िन्दगी

ज़िन्दगी इतनी
बेरहम और सितमगर
हो जाती है कि
हर एक सुहागन के लिये
सुहाग के प्रतीक
मंगलसूत्र को
भूखे-प्यासे बच्चों के लिये
बेबस और हैरान होकर
हताशा में बिकवाती ज़िन्दगी

इन्सान के लिये
सर्कस में जो करतब
मौत से कम नहीं होते
दो वक़्त की बेरहम
रूखी-सूखी रोटी ले लिये
ख़तरनाक करतब से
मौत को ही
रोजी-रोटी बनाती ज़िन्दगी

माँगन मरन समान है
फिर भी इन्सान
भीख माँग कर

मर-मर कर जी रहे हैं
तौहीन और जलालत की
बदहाल ज़िन्दगी को
मौत से भी बुरी
और बदतर बनाती ज़िन्दगी

अच्छा रोजगार न सही
मगर बेरोजगारी
ऐसी भी नहीं कि
भूख और प्यास की
मज़बूरी और बदहाली से
ज़िन्दा रहने के लिये
ख़ुद को गिरवी रखकर
बंधुआ मज़दूर बनाती ज़िन्दगी

असहाय निर्धन की
मज़बूरी ऐसी भी नहीं कि
भूख से बेहाल होकर
सड़े-गले बेकार
कूड़े-कचरे के ढेर से
सड़ी-गली रोटी बीनकर
भूख मिटाती ज़िन्दगी

ग़रीबी में प्रकृति भी
ऐसी बेरहम और
ज़ालिम हो जाती है कि
सर्दी, गर्मी, बारिश के
विपरीत मौसम में

खुले आसमान के नीचे
फुटपाथ पर नंगे बदन
गुज़र-बसर कराती ज़िन्दगी

इन्सान बेबस होकर
इतना विवश
हो जाता है कि
औरों की नज़रों में
ज़लालत से गिरना तो
बहुत दूर की बात है
ख़ुद की नज़रों में
बेशर्मी से गिरकर
ख़ुद को ख़ुद से ही
जलील कराती ज़िन्दगी

जब जीना भी
इतना मुश्क़िल है कि
मर-मर कर जीना भी तो
मुमक़िन नहीं होता
जीवन से हैरान, हताश
निराश और परेशान होकर
ख़ुदकुशी करवाती ज़िन्दगी।

आपदा के देवदूत

हम पूजा स्थलों पर
हर रोज करोड़ों रुपये
इस उम्मीद में
दान करते हैं कि
पूजा स्थलों में
विराजमान ईश्वर
आपदाओं से हमारी
हर तरह से रक्षा करेंगे

जब हमारे ऊपर
विपत्ति आई तो
पूजा स्थलों के दरवाजे
हमारी सुरक्षा के लिये
बेवफ़ा होकर बन्द हो गये
यानि कि हमारे
खरबों रुपये डूब गये
या फिर पूजा करने वाले
हजम करके खा गये
कौन जाने की कहाँ गये

जबकि ईश्वर तो
सबको ही देने वाले हैं

तब यह ज्ञान
प्राप्त हुआ कि
अपनी रक्षा और सुरक्षा
अपने ही हाथों से होती है
यानि कि अपना हाथ ही
अपना जगन्नाथ होता है

ईश्वर लाचार होकर
हैरान है कि
मैंने तो ऐसी दुनिया
नहीं बनाई थी
जहाँ पर
ऐसी आपदायें आयें
जब मुझ ईश्वर ने
ऐसा कुछ किया ही नहीं
तो मैं ईश्वर
आपदाओं की ज़िम्मेदारी
अपने ऊपर क्यों लूँ
नादान इन्सान ने
जैसा करा है
वैसा ही तो भुगतेगा
यक़ीनन मुझ ईश्वर ने
यही सोचकर
अपने दरवाजे
बंद कर लिये

आपदा के
कोहराम से

सुरक्षा के लिये
जिस ईश्वर पर
भरोसा करके
विश्वास किया
उस ईश्वर ने तो
हमारे कुकर्मों से
नाराज होकर
हमारे सर पर
आई आपदा से
मुँह मोड़ लिया

अब आपदा से
जो हमारी
रक्षा कर रहे हैं
उन्हें हमने
जीवन भर कभी भी
कुछ नहीं दिया
अपितु उनसे
समय-समय पर
बहुत कुछ लेकर भी
उन देवदूतों की उपेक्षा की
अब वही उपेक्षित
पुलिस, प्रशासन
चिकत्सा और सफाईकर्मी
अपनी जान को
दाँव पर लगाकर
हमारी जान की
रक्षा कर रहे हैं

जिसके के लिये
हमें उनका तमाम उम्र
अहसानमंद होना चाहिये
अगर हम नालायक
अहसानमंद भी नहीं रहे
तो कम से कम
अपने फ़ायदे के लिये
उनका सहयोग तो ज़रूर करे
और उनका शुक्रिया अदा करे

मगर हम घटिया
और नालायक
हैवान और शैतान
जाहिल–गंवार बनकर
इतने अहसान फ़रामोश
हो गये हैं कि
हमारी जान को
बचाने वालों की
जान के ही
दुश्मन हो गये
कभी हम उन पर
पत्थर बरसाते हैं
कभी उन पर थूकते हैं
कभी हम नंगे होकर
अश्लील हरकते करते हैं

क्या हम शैतान
मानव की शक़्ल में

दानव तो नहीं हैं
जो हम जाहिल
और गंवार बनकर
ऐसी बेहूदा, घटिया
और बुरी हरकते करते हैं

क्या ऐसे बेहूदा
बुरे और घटिया
हमारे धर्म और कर्म के
दीन और ईमान है
क्या हमारे धर्म ग्रन्थ
और धर्म गुरु
ऐसी गन्दी, बुरी
घटिया और अधर्म की
नापाक शिक्षा देते हैं
जिससे हम नालायक
हैवान और शैतान
जाहिल–गँवार बनकर
मानवता की हत्या से
बेरहम और बेशर्म
हैवान और शैतान
अधर्मी हत्यारे बन जाते हैं।